ब्याज का निर्धारण :→

संतुलन की अवस्था में ब्याज का निर्धारण उस बिन्दु पर होता है जहां मुद्रा की मांग (LP) मुद्रा की पूर्ति के बराबर हो जाती है। मुद्रा की मांग या पूर्ति सरकार अथवा केन्द्रीय बैंक की नीतियों पर निर्भर करती है और किसी दिये हुए समय में मुद्रा की पूर्ति स्थिर रहती है। दूसरी ओर ब्याज के निर्धारण में मुद्रा की मांग LP अधिक सक्रिय होती है जिसे हम आगे रेखा चित्र से देखते हैं।

Scanned by CamScanner

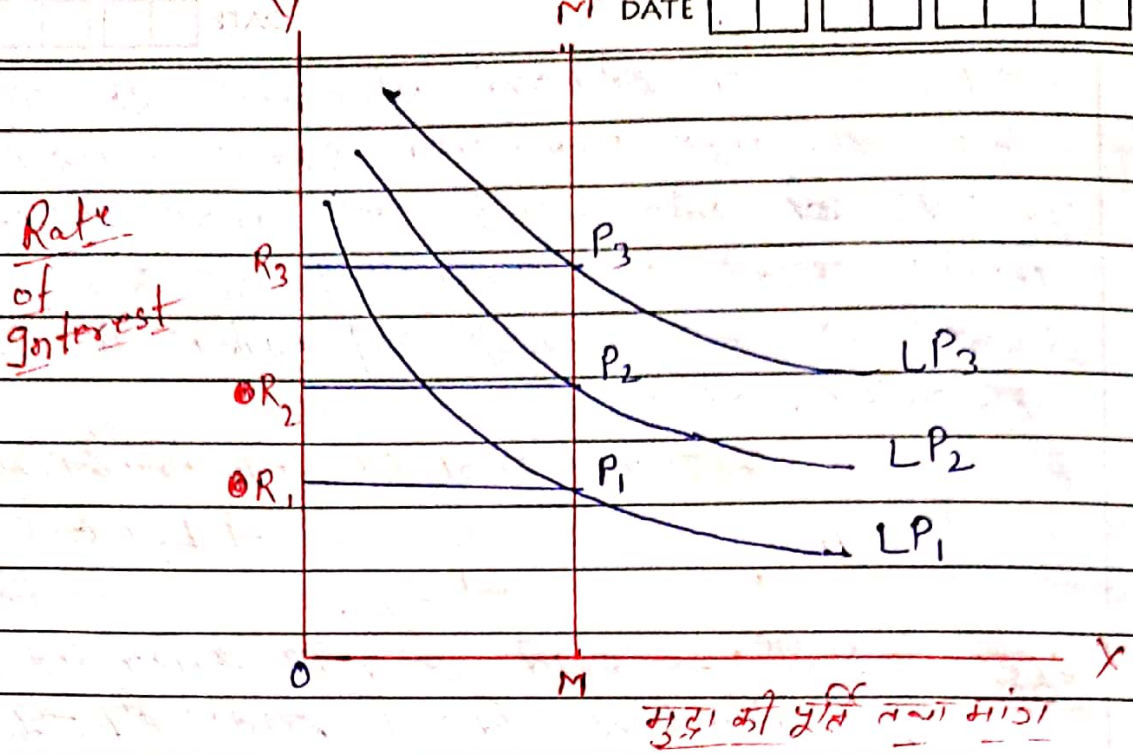

प्रस्तुत चित्र में X अक्ष पर मुद्रा की मांग, पूर्ति को दर्शाया गया है तथा Y अक्ष पर Rate of Interest को दर्शाया गया है। MM' मुद्रा की पूर्ति है। LP_1 रेखा MM' को P_1 बिन्दु पर काटती है तो Rate of Interest OR_1 रहता है। इसी प्रकार जैसे जैसे मुद्रा की मांग LP_2 तथा LP_3 पर होते हैं वैसे वैसे Rate of Interest बढ़कर OR_2 तथा OR_3 हो जाती है।

→

अब हम यह देखेंगे कि तरलता पसन्दगी या मुद्रा की मांग (LP) स्थिर रहने पर तथा उसकी पूर्ति में परिवर्तन करते हैं तो ब्याज दर पर क्या प्रभाव पड़ेगा। इसे हम एक रेखा चित्र के द्वारा देखते हैं।

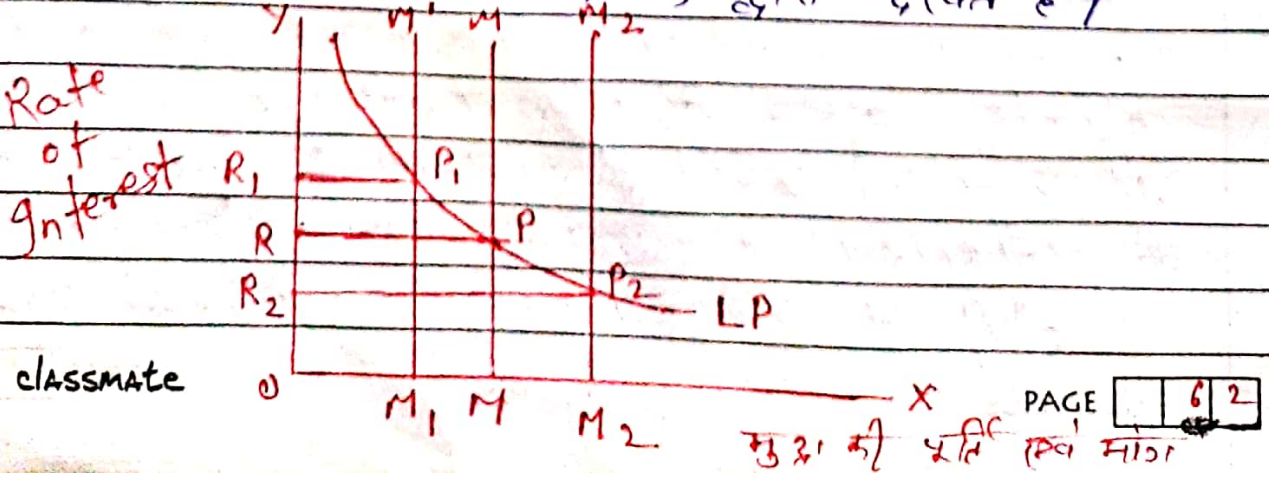

Scanned by CamScanner

DATE

परन्तु चित्र में OX अक्ष पर मुद्रा की मांग और पूर्ति है तथा OY अक्ष पर Rate of Interest है। चित्र में मुद्रा की मांग LP स्थिर है। तथा पूर्ति बदलती बढ़ती है। प्रारंभ में मुद्रा की पूर्ति MM है जो LP को P बिन्दु पर काटती है। और Rate of Interest OR तय होता है फिर जब मुद्रा की मांग बढ़कर बढ़ती है तो LP रेखा को P_1 बिन्दु पर काटती है और Rate of Interest, OR से बढ़कर OR_1 हो जाती है फिर जब मुद्रा की पूर्ति को बढ़ाकर M^2M^2 है जो LP रेखा को P_2 बिन्दु पर काटती है और Rate of Interest बढ़कर OR_2 हो जाती है।

Scanned by CamScanner